International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(II), July - September, 2022, pp. 109-112

जयपुर के मंदिरों की प्रतिमाएं

डॉ. अमित मेहता*

प्रस्तावना

प्रतिमा के द्वारा भक्तगण अपनी प्रार्थना व भावों को अपने आराध्य तक पहुँचाते है। प्रतिमा का शाब्दिक अर्थ "प्रतिरूप" अर्थात् समान आकृति होता है। प्रायः "प्रतिमा" शब्द का उपयोग किसी धर्म से सम्बन्धित मुर्तियों के लिए किया जाता है।(1) भारत में प्रतिमा पूजन का प्रचलन प्राचीन काल से ही चला आ रहा है।(2) मोहनजोदड़ो व हडप्पा कालीन अवशेषों से ज्ञात होता है कि उस समय देवों के विविध अंगों, प्रत्यंगों, रूपों व आकारों की उपासना नहीं होती थी।(3) कुछ विद्वान मानते है कि वैदिक काल में प्रतिमा पूजन का प्रचलन था तथा कुछ विद्वानों के अनुसार प्रतिमा पूजन का प्रचलित नहीं था।(4) ब्राह्मण काल में प्रतिमा पूजा को ओर अधिक बल मिला। प्रतिमा किस देवी या देवता की है इसकी पहचान प्रतिमा के वाहन, मुद्रा, अलंकरण, प्रतिक रूप और भुजाओं की संख्या से होती है।(5) जयपुर शहर के अनेक मंदिरों में विभिन्न देवी–देवताओं की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित है जो अत्यधिक सुन्दर, आकर्षक व मनोहारी है। इनके निर्माण का कला विज्ञान भी उच्च कोटि का है। इनमें से कुछ देवी–देवताओं की प्रतिमाओं का वर्णन इस प्रकार है–

गणेशजी

गणेश जी की पूजा गुप्तकाल से भी पहले से की जा रही है। गणेशजी की अनेक प्रतिमाओं जैसे बालगणपति, तरूण गणपति, शक्ति गणपति, लक्ष्मी गणपति, उच्छि गणपति, महागणपति, उर्ध्व गणपति, पिंगल गणपति, विघ्नराज गणपति, उन्मत उच्छिष्ट गणपति, भूवनेश गणपति, नृतगणपति, हरिद्रा गणपति, एकदन्त, सूर्यकर्ण, हेरम्ब, भक्ति विघ्नेश्वर, वीर विघ्नेश्वर, प्रसन्न गणपति, ध्वज गणपति, भालचन्द्र का वर्णन प्राप्त होता है।(6) गणपति जी के नामों के अनुसार गणपति जी की प्रतिमाओं के अलग–अलग स्वरूप होते है। पुराणों में गणेश जी के आठ हाथ तथा वाहन चूहा बताया गया है। गणेश जी प्रतिमा में अपने वाहन पर सवार या वाहन के पास में बैठे दिखाये जाते है। गणेश जी की सुण्ड़ वक्राकार होती है। कुछ मंदिरों में उनके साथ उनकी दोनों पत्नियों रिद्धि व सिद्धि तथा दोनों पुत्रों शुभ व लाभ की प्रतिमाएं भी होती है। जयपुर में मोतीडुंगरी नामक स्थान पर गणेश जी का सुन्दर मंदिर निर्मित है। यहॉ पर गणेश जी की प्रतिमा जयपुर नगर सेठ पल्लीवाल मावली (गुजरात) से 1761 में लाये थे। यह प्रतिमा लगभग 800 साल पुरानी बतायी जाती है।(7) गणेश जी की दाहिनी ओर सुण्ड वाली इस प्रतिमा पर सिन्दुर का चोला चढ़ाकर भव्य श्रृंगार किया जाता है। जयपुर के गढ़ गणेश मंदिर में गणेश जी के बाल स्वरूप की पूजा की जाती है। यहॉ गणेश जी की पूजा बिना सुण्ड़ वाली प्रतिमा के रूप में होती है। इस मंदिर में मुर्ति की प्रतिष्ठा इस प्रकार की गई है कि जयपुर के राजपरिवार के सदस्य चन्द्रमहल की ऊपरी मंजिल से गणेश जी की प्रतिमा के दर्शन कर सके।(8)

* सहायक आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान।

शिवजी

प्राचीन काल से ही शिव की आराधना होती आ रही है। इनका पूजन व्यक्त और अव्यक्त रूप में किया जाता है। शिव के व्यक्त रूप में शिव की मूर्ति का तथा अव्यक्त रूप में शिवलिंग का पूजन किया जाता है। व्यक्त रूप में शिवमूर्ति जटाधारी, जटाओं में चन्द्रमा और गंगा, गले में सर्पमाला, नीलकण्ठ, त्रिशुलधारी तथा बाघम्बर युक्त होती है। शिव प्रतिमा के बायीं ओर उनकी पत्नी पार्वती की मूर्ति स्थापित की जाती है। शिव उनके वाहन नन्दी पर आसीन या उनके पास खड़े दिखाये जाते है। कुछ मंदिरों में उनके दोनों पुत्र कार्तिकेय व गणेश की प्रतिमाएं भी होती है।[9] जयपुर के चांदनी चौक में प्रतापेश्वर जी के मंदिर में शिवजी पूरे परिवार सहित विराजित है।[10] अव्यक्त रूप में शिवलिंग के चारों ओर उनकी पत्नी पार्वती, दोनों पुत्र कार्तिकेय व गणेश जी तथा वाहन नन्दी की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित होती है। कुछ मंदिरों में उनके वाहन नन्दी शिव के सामने या मंदिर के बाहर प्रतिष्ठित होते है।[11] जयपुर के ताडकेश्वर जी के मंदिर के चौक में नन्दी की विशाल पीतल की मूर्ति विद्यमान है।[12] शिवलिंग के दो प्रकार बताये गये है–चल लिंग तथा अचल लिंग। "विष्णु धर्मोत्तर" के अनुसार शिवलिंग के तीन भाग होते है– 1. योगपीठ (लिंग के ऊपर का वृत्ताकार भाग) 2. भद्रपीठ (योगपीठ के नीचे का अष्ठ कोणिय भाग) 3. बह्मपीठ (भद्रपीठ के नीचे का चोकोर भाग)।[13] शिवलिंग पूजन में 12 ज्योर्तिलिंगों का बड़ा महात्म्य है। जयपुर के जौहारी बाजार में स्थित विजय गोपालजी के मंदिर में 11 ज्योर्तिलिंग तथा पुराने घाट पर स्थित मंदिर में 12 ज्योर्तिलिंग प्रतिष्ठित है।[14] जयपुर में शिव पूजन प्रतापेश्वर, ताडकेश्वर, राजराजेश्वर, झारखण्ड महादेव, आनन्देश्वर, विश्वेश्वर, भूतेश्वर, रत्नेश्वर आदि नामों से किया जाता है।[15]

विष्णुजी

जयपुर में स्थान–स्थान पर वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित मंदिर निर्मित है। विष्णु मंदिरों में प्रायः विष्णुजी की प्रतिमा खड़ी तथा चर्तुभुजी होती है। प्राचीन शिल्प शास्त्रों के अनुसार विष्णुजी की चारों भुजाएं चार आयुधों– शंख, चक्र, गदा व पद्म युक्त होती है।[16] विष्णु के अवतार राम और कृष्ण की प्रतिमा द्विभुजी होती है। राम के आयुध धनुष–बाण और कृष्ण के आयुध बंशी व लकुटी होते है। कलियुग के अन्त में होने वाले कल्कि जी विष्णु जी के अवतार माने जाते है।[17] कल्किजी की मुर्तियॉ द्वि या चर्तु भुजीय, खड़ग हाथ में लिये, क्रोध में घोडे पर सवार होती है। जयपुर के सिरह्ड्योड़ी बाजार में कल्कि जी का मंदिर स्थित है। तथा मंदिर के चौक में कल्कि जी के धोड़े की विशाल संगमरमर के पत्थर से निर्मित प्रतिमा विद्यमान है।[18] विष्णुजी का वाहन गरूड़ दो पंख युक्त मानवाकार होता है। गरूड़ मुर्ति विष्णुजी की मुर्ति के सामने उठी हुई पीठ पर या स्तम्भ के ऊपर बनायी जाती है। यह स्तम्भ गरूड़ ध्वज कहलाता है। जयपुर में छोटी चोपड़ में स्थित लुणकरण नटाणी की हवेली में सीताराम जी के मंदिर में गरूड़ की प्रतिमा इसी रूप में प्रतिष्ठित है। विष्णुजी की पत्नी लक्ष्मी जी की मुर्ति चर्तुभुजी व कमल पर विराजित होती है। विष्णुजी की मुर्ति के साथ लक्ष्मी जी की मुर्ति प्रतिष्ठित की जाती है। इस प्रकार युग्म मुर्ति को "लक्ष्मीनारायण" कहा जाता है। जयपुर के सुप्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण बिड़ला मंदिर में विष्णुजी की मुर्ति व लक्ष्मी जी की मुर्ति एक ही संगमरमर के टुकड़े से बनी हुई है। राम की मुर्ति सीताजी के साथ या पंचायतन के रूप में प्रतिष्ठित की जाती है। तथा प्रायः इनके साथ हनुमान जी की मुर्ति भी प्रतिष्ठित की जाती है।[19] जयपुर के चाँदपोल बाजार में स्थित तिलक मंदिर में हनुमान जी का विशाल मंदिर है। जयपुर में अनेक हनुमान जी के स्वतंत्र मंदिर भी है।[20] जयपुर के प्रसिद्ध खोले के हनुमान मंदिर में हनुमान जी की लेटी हुई अद्भुद प्रतिमा प्रतिष्ठित है। कृष्ण की प्रतिमा बालरूप में या राधाजी की प्रतिमा के साथ प्रतिष्ठित होती है। कृष्ण प्रतिमाएं हाथों में नवनीत लिये या गोवर्धन पर्वत उठाए भी मिलती है। शालाग्राम के रूप में विष्णुजी का अव्यक्त पूजन भी होता है। शालाग्राम के अलग मंदिर नहीं होते है परन्तु कई मंदिरों में विष्णुजी की मुर्ति के साथ– साथ इनका पूजन भी किया जाता है। जयपुर में वैष्णव सम्प्रदाय के श्रीगोविन्द देव मंदिर, श्री गोपीनाथजी मंदिर, ब्रजनिधि मंदिर, मदन मोहन मंदिर, आनन्द कृष्ण मंदिर, श्री सीताराम द्वार मंदिर, गोवर्द्धननाथ मंदिर, गिरधारीजी मंदिर, राधा–किशन मंदिर आदि मंदिर है।

शक्ति या देवी

जयपुर में स्थान–स्थान पर देवी सम्बन्धित मंदिर प्रतिष्ठित है। इनमें प्रमुख शक्ति मंदिर आमेर में स्थित शिला माता का मंदिर है।[21] एक शिला पर माता की प्रतिमा उत्कीर्ण होने के कारण इसे शिला देवी कहा जाता है। यह बंगाल के राजा ने जयपुर के महाराजा मानसिंह से पराजित होने के बाद उन्हें भेंट की थी। प्रतिमा का टेढ़ा चेहरा इसकी मुख्य विशेषता है। शिला देवी की प्रतिमा महिषासुर मर्दिनी के रूप में उत्कीर्ण है, जिसमें देवी महिषासुर को एक पैर से दबाकर दाहिनें हाथ से त्रिशुल से मार रही है। इसलिए देवी की गर्दन दायीं ओर झुकी हुई है। शिला देवी के बायीं ओर कछवाहों की कुलदेवी हिंगलाज माता की प्रतिमा है जो पहले यहॉ राज करने वाले मीणाओं द्वारा बलुचिस्तान के हिंगलाज भवानी शक्तिपीठ से लायी गयी थी। शिल्प शास्त्र के अनुसार देवी के अनेक स्वरूपों की प्रतिमाएं बनाने का विघान है। इनमें देवी का प्रमुख स्वरूप "दुर्गा" है। इनके नौ रूप है जिनके वाहन और आयुध अलग अलग होते है।[22] किसी रूप में दो भुजाएं किसी रूप में चार भुजाएं तो किसी रूप में आठ या दस भुजाएं भी होती है।[23]

भैरव

शिवपुराण के अनुसार शिव का पूर्ण रूप भैरव है।[24] ये शिव के उग्ररूप है। आमेर में सागर रोड़ पर बटुक भैरवजी का मंदिर स्थित है। रूपमण्डन में अष्टभुजि बटुक भैरवजी की प्रतिमा का वर्णन है जिसका वाहन श्वान बताया है।[25]

दिग्पाल

जयपुर में अनेक मंदिरों के द्वारों पर दिग्पाल प्रतिष्ठित है।[26] यहॉ मंदिर निर्माण के समय अष्ठ दिग्पाल की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित करने का प्रचलन रहा है। दिग्पाल को लोकपाल के नाम से भी जाना जाता है।[27] पुराणोनुसार दसो दिशाओं के देवता या पालन करने वाले "दिग्पाल" नाम से जाने जाते है। मनुस्मृति में आठ दिग्पालों (चन्द्र, सूर्य, वायु, अग्नि, यम, वरूण, इन्द्र व कुबेर) का उल्लेख मिलता है। जयपुर में सांगानेरी गेट पर स्थित श्रीरूपचन्द्रजी मंदिर, गोविन्द देवजी मंदिर, मोतीडुंगरी मंदिर, बिरला मंदिर, चौड़ा रास्ता स्थित श्री द्वारकाधीश जी मंदिर, श्री राधा–गोपीनाथ मंदिर आदि के द्वारों पर अष्ठ दिग्पाल की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित है।[28]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान व मुर्तिकला पृ.1
2. गोपीनाथ राव, एलिमेंटस ऑफ हिन्दु आइकोनोग्राफी, वोल्युम 1, भाग–1, पृ.1
3. गोपीनाथ शर्मा, राज. का सांस्कृतिक इतिहास, पृ, 80
4. इन्दुमति मिश्र, प्रतिमा विज्ञान, पृ.84
5. गोपीनाथ राव, एलिमेंटस ऑफ हिन्दु आइकोनोग्राफी, वोल्युम 1, भाग–1, पृ.1
6. गोपीनाथ राव, एलिमेंटस ऑफ हिन्दु आइकोनोग्राफी, वोल्युम 1, भाग–1, पृ. 35 से 67
7. ड़ॉ. मोहन लाल गुप्ता, जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ. 68
8. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर
9. श्री नारायण चतुर्वेदी, नागर शैली के नये हिन्दु मंदिर, पृ. 33–35
10. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर
11. पंकजलता श्रीवास्तव, हिन्द तथा जैन , प्रतिमा विज्ञान, पृ.173
12. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर
13. डॉ. ब्रजभुषण श्रीवास्तव, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान व मुर्तिकला पृ.61
14. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर

15. रामगोपाल विजयवर्गीय, गुलाबी नगर की गुलाबी यादें, पृ. 60,61
16. श्री नारायण चतुर्वेदी, नागर शैली के नये हिन्दु मंदिर, पृ. 31
17. डॉ. ब्रजभुषण श्रीवास्तव, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान व मुर्तिकला पृ.48,37
18. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर
19. श्री नारायण चतुर्वेदी, नागर शैली के नये हिन्दु मंदिर, पृ. 33
20. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर
21. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर
22. श्री नारायण चतुर्वेदी, नागर शैली के नये हिन्दु मंदिर, पृ. 35–36
23. पंकजलता श्रीवास्तव, हिन्द तथा जैन , प्रतिमा विज्ञान, पृ.216
24. द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल, भारतीय वास्तुशास्त्र, प्रतिमा विज्ञान, पृ. 264
25. रूपमण्डन, भुमिका पृ.81
26. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर
27. द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल, भारतीय वास्तुशास्त्र, प्रतिमा विज्ञान, पृ.37
28. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर

❖◆❖